प्रश्नः

''हम नये नियम की कलीसिया को कैसे पहचान सकते हैं?''

उज़रः

यदि उद्धार केवल हमारे शुभ और नैतिक कर्मों से ही होता है, तो नये नियम की कलीसिया की पहचान करने की कोशिश करना समय की बर्बादी ही होगी। कलीसिया की स्थापना से पहले कुछ लोगों का नैतिक स्तर बहुत ऊंचा था और कलीसिया के बाहर व कलीसिया में आज भी कुछ लोगों के अपने सिद्धांत होते हैं जिन पर वे कायम रहते हैं। यदि नैतिकता के कारण एक पापी स्वर्ग में ले जाया जा सकता, तो क्रूस पर यीशु की क्रूर मृत्यु की कोई आवश्यकता न होती और वह व्यर्थ थी। परन्तु यदि उद्धार के लिए उसके लहू का होना आवश्यक है, तो उसकी कलीसिया का होना भी आवश्यक है, ज़्योंकि उसके लहू से ही कलीसिया को खरीदा गया है (प्रेरितों 20:28)। उसका लहू सुसमाचार की आज्ञा मानने वाले हर पापी के लिए छुटकारे का दाम चुका देता है, और वह पापी अपने पाप से शुद्ध होकर, उद्धार पाए हुए लोगों के समूह का सदस्य बन जाता है। उस समूह को नये नियम की कलीसिया कहा जाता है। इसलिए उस समूह का सदस्य बनने का अर्थ पिछले पापों से उद्धार पाना है। उस समूह में विश्वासी बने रहने का अर्थ स्वर्ग की आशा पाना है। उस समूह के बाहर होने का अर्थ उद्धार के बिना और स्वर्ग की प्रतिज्ञा से रहित होना है। यह विषमता उस कलीसिया को पहचानने के महत्व और उसका भाग बनने पर बल देती है।

कुरिन्थुस में, यीशु की कहानी सुनकर पापी उसमें डुबोए गए थे (प्रेरितों 18:8; देखिए रोमियों 6:3-5)। उन पापियों को, जिन्हें पिछले पापों से शुद्ध किया गया था, ''परमेश्वर की कलीसिया ... जो कुरिन्थुस में है'' कहा गया था (1 कुरिन्थियों 1:2)। फिर इसका अर्थ यह हुआ, कि पापी चाहे कहीं भी हों यीशु की कहानी सुनकर विश्वास की आज्ञाकारिता में आने

पर (प्रेरितों 16:31; रोमियों 1:5), तुरन्त लहू से खरीदे जाकर उस समूह का सदस्य बन जाते हैं जिसे नये नियम की कलीसिया कहा जाता है।

माता-पिता द्वारा नवजात शिशुओं को बपतिस्मा दिलाने को पवित्र शास्त्र के अनुसार यह नहीं कहा जा सकता कि वे बच्चे, जो विश्वासी भी नहीं हैं, नये नियम की कलीसिया के सदस्य हैं। इसके अलावा, माता-पिता हों या बच्चे, यदि बपतिस्मे के लिए उन पर जल का छिड़काव किया जाता है, अर्थात यदि वे ''बपतिस्मा पाने से ... उसके साथ गाड़े'' नहीं गए (रोमियों 6:4), तो यह नहीं कहा जा सकता कि वे नये नियम की कलीसिया के सदस्य बन गए हैं।

यदि किसी कलीसिया का आरम्भ नये नियम के लिखे जाने के बाद हुआ है, परन्तु उसका उल्लेख किसी विश्वकोष या इतिहास की पुस्तक में मिलता हो तो उसे नये नियम की कलीसिया नहीं कहा जा सकता। यदि किसी कलीसिया का आरम्भ मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, और पुनरुत्थान के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के दिन, पर यरूशलेम में न हुआ हो (देखिए लूका 24:46, 47; प्रेरितों 2:41-47; 11:15), तो वह कलीसिया नये नियम की कलीसिया होने का दावा नहीं कर सकती।

यदि कोई कलीसिया पीछे मुड़कर इतिहास में देखती है कि उसका संस्थापक कोई पुरुष या स्त्री है, तो वह अपने आप को वह कलीसिया होने का दावा नहीं कर सकती जिसे यीशु ने बनाया था (मत्ती 16:18)। यदि कोई कलीसिया नये नियम की पुस्तकों के अलावा धर्मसार की दूसरी पुस्तकों का इस्तेमाल करती है, तो वह नये नियम की कलीसिया होने का दावा नहीं कर सकती। (पढ़िए यूहन्ना 14:26; 16:13; 1 यूहन्ना 4:6; 2 यूहन्ना 7-9.)

दूसरी ओर यदि कोई कलीसिया रोटी तोड़ने के लिए सप्ताह के पहले दिन इकट्ठी होती है (प्रेरितों 20:7), तो यह उस कलीसिया में नये नियम की कलीसिया होने के चिह्न हैं। यदि किसी कलीसिया में ऐसे सदस्य हैं जो सप्ताह के पहले दिन प्रभु के कार्य के लिए अपनी आमदनी में से देते हैं (1 कुरिन्थियों 16:1, 2) तो इस कलीसिया में नये नियम की कलीसिया कहलाने का चिह्न है। यदि कलीसिया भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाने के लिए इकट्ठी होती है (इफिसियों 5:19), तो यह नये नियम की कलीसिया होने का एक चिह्न है। आराधना के इन कार्यों के अलावा, यदि यह साज़ बजाने, धूप जलाने, मूर्तियों के आगे झुकने, या प्रार्थना के साथ मोमबत्तियां जलाने के लिए इकट्ठी होती है, तो इसमें वे चिह्न हैं जो नये नियम की कलीसिया में नहीं मिलते।

यदि किसी कलीसिया में श्रद्धालु और धर्मी लोग हैं, तो इसमें नये नियम की कलीसिया की एक विशेषता है। यदि इसके सदस्य सांसारिक हैं और शारीरिक अभिलाषाओं और इच्छाओं की ओर आकर्षित होते हैं (गलतियों 5:24, 25; 1 यूहन्ना 2:15), तो यह नये नियम की विश्वासी कलीसिया से बिल्कुल अलग तस्वीर है।

यदि कोई कलीसिया सुसमाचार के प्रचार, सुधार और दान के रूप में प्रभु के काम में अन्य कलीसियाओं के साथ सहयोग करती है (प्रेरितों 11:22-24, 29, 30), तो यह इसमें नये नियम की कलीसिया की पहचान का एक चिह्न है। यदि यह दूसरी कलीसियाओं के साथ

सहयोग करने से इन्कार करती है तो इसमें नये नियम की कलीसिया बनने में अभी कमी है। यदि कोई कलीसिया सुसमाचार के प्रचार में (फिलिप्पियों 4:15-17), परमेश्वर के लोगों को सिखाने (प्रेरितों 15:3) और परोपकार के कामों में (प्रेरितों 6:1-6) लोगों का सहयोग करती है, तो यह नये नियम की कलीसिया होने का उसका एक चिह्न है। यदि यह ऐसे सहयोग से इन्कार करती है, तो नये नियम की शिक्षा के अनुरूप होने में इसमें वह कमी पाई जाती है।

यदि कोई कलीसिया प्रसिद्ध है, तो उसमें नये नियम की कलीसिया होने का अभाव है। इसके अलावा यदि इसने अपने आप को कोई साज़्प्रदायिक कलीसिया बना लिया है, ज़्योंकि डिनोमिनेशन या साज़्प्रदायिक कलीसिया ''नाम देने का कार्य'' ही है। किसी चीज़ को डिनोमिनेट करने का अर्थ उसे बांटना या कोई नाम देना होता है। कलीसिया के नाम के लिए नये नियम में से ढूंढ़ना व्यर्थ है, ज़्योंकि यह असाज़्प्रदायिक अर्थात बिना किसी नाम के है।[2]

पाद टिप्पणियां

[1] ''यीशु के जन्म के समय के सज़्बन्ध में काफी उलझन पाई जाती है। उसका जन्म 1 ईस्वी में 25 दिसज़्बर को नहीं हुआ था। यीशु के जन्म के लगभग छह सदियों बाद इस घटना से इतिहास का सज़्बन्ध जोड़ने की कोशिश की गई थी। डायोनिसियस ऐज़्सीज़्यूस ने अपने विचार के साथ, इतिहास में वापस जाकर जो तिथि उसे सही लगी वही ठहरा दी। उसी की गणनाओं के आधार पर, मसीही कैलेण्डर बनाया गया था जो आज भी प्रचलन में है। कठिनाई इस तथ्य में है कि जो तिथि उसने ठहराई थी वह बाद में गलत साबित हो गई थी। उसे चार या पांच वर्ष और पीछे जाना चाहिए था। यीशु का जन्म 5 ई.पू. या 4 ई.पू. में हुआ था। विद्वान इस तिथि में अपने विश्वास का आधार कई प्रमाणों को मानते हैं, जैसे कि हेरोदेस की मृत्यु का समय, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई का आरज़्भ, मन्दिर का बनना आदि। तर्क देने का प्रयास किए बिना हम कह सकते हैं कि विद्वान इस निर्णय में व्यावहारिक तौर पर अस्पष्ट हैं'' (एच. आई. हेस्टर, द *हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [लिबर्टी, Mo.: ज़्वालिटी प्रैस, 1963], 99); ''जोसेफस ने लिखा कि हेरोदेस की मृत्यु के तुरन्त बाद चांद पर ग्रहण लगा था (*एंटीज़्विटीस* xvii. vi.4 [167])। इस ग्रहण की तिथि मार्च 12/13, 4 ई. पू. मानी जाती है। ... जिस कालक्रम प्रणाली का इस्तेमाल हम आज करते हैं उसका इस्तेमाल डायोनिसियस ऐज़्सीज़्यूस ने छठी शताज़्दी में किया था (लगभग 500-550 ई.) जिसने पहले इस्तेमाल किए जाने वाले डियोज़्क्लिशियन काल को छोड़ दिया था। अपनी प्रणाली में, डायोनिसियस ने गणना की कि रोम की स्थापना से 1 ईस्वी और 754वां वर्ष मिलते जुलते हैं; पर उसकी गणना में एक गलती के अलावा ऊपर दी गई जोसेफस की जानकारी ने बाद के काल में निरूपण करने वालों पर यह समझने के लिए दबाव डाला कि यीशु का जन्म, जो हेरोदेस की मृत्यु से पहले हुआ था, 4 ई.पू. के बाद नहीं हो सकता'' (जैक पी. लुइस, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यु,* भाग 1, द लिविंग कमैंट्री [ऑस्टिन, टैज़्स.: स्वीट पज़्लिशिंग कं., 1976], 50, 51)। [2] NASB के अनुसार प्रभु की कलीसिया के लिए निज़्न पदनाम दिए जाते हैं: (1) ''My church'' अर्थात अपनी कलीसिया (मज़ी 16:18), 1 बार, (2) ''the church'' अर्थात कलीसिया (मज़ी 18:17), 63 बार, या ''the churches'' अर्थात कलीसियाएं या कलीसियाओं, लगभग 29 बार, (3) ''church of God'' अर्थात परमेश्वर की कलीसिया (1 कुरिन्थियों 1:2), लगभग 9 बार; ''the churches of God'' अर्थात परमेश्वर की कलीसियाएं, 3 बार, (4) ''churches of the Gentiles'' अर्थात अन्यजातियों की कलीसियाएं (रोमियों 16:4), 1 बार, (5) ''churches of Christ'' अर्थात मसीह की कलीसियाएं (रोमियों 16:16), 1 बार,

(6) ''churches of the saints'' अर्थात पवित्र लोगों की कलीसियाएं (1 कुरिन्थियों 14:33), 1 बार, (7) ''church of the firstborn'' अर्थात पहलौठों की कलीसिया (इब्रानियों 12:23), 1 बार। इस प्रकार कलीसिया के सात अलग-अलग नाम जो उनमें पाए जाने वाले लोगों को, उनकी बुलाहट को और उनके स्वामित्व को दिखाते हुए, परन्तु कोई नाम न देते हुए मिलते हैं। जब कोई नये नियम की कलीसिया को कोई नाम देता है, तो वह वह काम कर रहा होता है जिसे आत्मा ने नहीं किया।